प्रथमः पाठः

वन्दना

(नमः तथा नमामि के प्रयोग)

स्तुत पाठ में संसार के सृष्टिकर्ता परमात्मा की वन्दना विभिन्न पौराणिक श्लोकों में की गयी है । ज्ञान का आरंभ रम प्रभु की स्तुति से ही हो यह इस पाठ का लक्ष्य है । परमात्मा जगत् के सभी कार्यों के संचालक तथा बिना माँगे ब-कुछ देने वाले हैं । इसलिए सबका कर्तव्य है कि उनकी वन्दना गान सहित करें ।]

नमस्ते विश्वरूपाय प्राणिनां पालकाय ते ।
जन्म-स्थिति-विनाशाय विश्ववन्द्याय बन्धवे ॥1॥

प्रसादे यस्य सम्पत्तिः विपत्तिः कोपने तथा ।
नमस्तस्मै विशालाय शिवाय परमात्मने ॥2॥

ज्ञानं धनं सुखं सत्यं तपो दानमयाचितम् ।
प्रसादे यस्य लभते मानवस्तं नमाम्यहम् ॥3॥

नमामि देवं जगदीशरूपं स्मरामि रम्यं च जगत्स्वरूपम् ।
वदामि तद्-वाचक-शब्दवृन्दं महेश्वरं देवगणैरगम्यम् ॥4॥

शब्दार्थः

नमस्ते (नमः + ते) = नमस्कार

विश्वरूपाय = विश्वरूप (समस्त संसार ही जिसका रूप है वैसा)के लिए

प्राणिनाम् = प्राणियों के / की

पालकाय = पालन करने वाले के लिए

ते (तुभ्यम्) = आपके लिए

जन्म-स्थिति-विनाशाय = रचना, विद्यमानता तथा नाश के लिए

विश्ववन्द्याय = संसार के द्वारा वन्दनीय के लिए

बन्धवे = मित्र / संबंधी के लिए

प्रसादे = कृपा होने पर

यस्य = जिसका

सम्पत्तिः = धन

विपत्तिः = संकट

कोपने = क्रोध करने पर / में

तथा = और, उस प्रकार से

नमस्तस्मै (नमः+तस्मै) = उसको / उनको नमस्कार है

विशालाय = बड़े / विशाल को / के लिए

शिवाय = शिव के लिए/ मङ्गल के लिए

परमात्मने = परमात्मा के लिए

ानम्	=	ज्ञान, जानकारी
त्यम्	=	सत्य, सच
पः	=	तपस्या
ानम्	=	दान
याचितम्	=	न माँगा गया, बिना माँगे
भते	=	प्राप्त करता है
ानवस्तम् (मानवः+तम्)	=	मानव / मनुष्य, (तम्=) उसको
माम्यहम् (नमामि+अहम्)	=	नमस्कार करता हूँ; (अहम्=) मैं
मामि	=	नमस्कार करता हूँ
वम्	=	देवता को
गदीशरूपम् (जगत्+ईशरूपम्)	=	संसार के स्वामी रूप वाले (को)
मरामि	=	याद / स्मरण करता हूँ
म्यम् सुन्दर जगत्स्वरूपम्	=	जगत् (की रचना) के रूप वाले
दामि	=	कहता / बोलता हूँ
द् वाचक-शब्दवृन्दम्	=	उस (देव) के बोधक शब्दसमूह को
हेश्वरम्	=	महान् ईश्वर को
वगणैरगम्यम् (देवगणैः+अगम्यम्)	=	देवसमूहों के द्वारा न प्राप्त करने योग्य

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

मस्ते	=	नमः + ते (विसर्गसन्धिः)
मस्तस्मै	=	नमः + तस्मै (विसर्गसन्धिः)

मानवस्तम् = मानवः + तम् (विसर्गसन्धिः)

नमाम्यहम् = नमामि + अहम् (यण्सन्धिः)

जगदीशः = जगत् + ईशः (व्यञ्जनसन्धिः)

देवगणैरगम्यम् = देवगणैः + अगम्यम् (विसर्गसन्धिः)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

लभते = √लभ् , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

नमामि = √नम् , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

स्मरामि = √स्मृ , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

वदामि = √वद् , लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम्

अगम्यम् = नञ् + √गम् + यत्, नपुं, एकवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. उच्चैः वदत -

(क)	नमामि	नमावः	नमामः
	वदामि	वदावः	वदामः
	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः
(ख)	पालकाय	पालकाभ्याम्	पालकेभ्यः
	विनाशाय	विनाशाभ्याम्	विनाशेभ्यः
	विशालाय	विशालाभ्याम्	विशालेभ्यः

2. श्लोकान् सस्वरं गायत ।

लिखित:

श्लोकांशान् लिखत -

(क) प्रसादे यस्य .... विपत्तिः .... तथा ।

.... विशालाय .... परमात्मने ॥

(ख) नमामि देवं ....

.... तत्कार्यजगत्स्वरूपम् ।

.... तद् वाचक-शब्दवृन्दम्

महेश्वरं .... ॥

उत्तराणि लिखत -

(क) शिवस्य प्रसादात् किम् मिलति ?

(ख) कस्य कोपने विपत्तिः लभ्यते ?

(ग) जगत् कीदृश्यम् अस्ति ?

(घ) संसारस्य विनाशं कः करोति ?

(ङ) प्राणिनां पालनं कः करोति ?

सुमेलितं कुरुत -

(क)	(ख)
सुखम्	सम्पत्तिः
सत्यम्	ग्रहणम्
विपत्तिः	कोपनम्
जन्म	दुःखम्
प्रसादः	मिथ्या
दानम्	विनाशः

6. **रिक्तस्थानानि पूरयत -**

(क) शिवाय .... । नमः / नमामि

(ख) .... नमः । गणेशं / गणेशाय

(ग) .... नमः । सरस्वतीं / सरस्वत्यै

(घ) जगदीशं .... । नमामि / नमः

(ङ) मातरं .... । नमः / नमामि

(च) .... स्मरामि । कृष्णं / कृष्णाय

(छ) .... नमः । तस्मात् / तस्मै

7. **सन्धिविच्छेदं कुरुत -**

यथा - यद्यपि = यदि + अपि

नमस्तस्यै = ... + ...

धर्मात्मा = ... + ...

गच्छाम्यहम् = ... + ...

जगदीश्वरः = ... + ...

नमस्कारः = ... + ...

गणेशः = ... + ...

सदैव = ... + ...

8. **वाक्यानि रचयत -**

गच्छामि - ....

यूयम् - ....

विद्यालयात् - ....

देवम् - ....

वृक्षेषु - ....

9. पाठभिन्नं श्लोकमेकं स्वस्मरणेन लिखत ।

10. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

(क) वह पिता को प्रणाम करता है ।

(ख) वे दोनों धन प्राप्त करते हैं ।

(ग) वे सब सत्य बोलते हैं ।

(घ) तुम वेद पढ़ते हो ।

(ङ) देवता को (देवाय) नमस्कार है ।

(च) तुम दोनों विद्यालय जाते हो ।

(छ) तुमलोग कार्य करते हो ।

योग्यता-विस्तारः

किसी कार्य का आरम्भ स्तुति, प्रार्थना या वन्दना से किया जाता है । इसमें यह भावना होती है कि हमारा कार्य अच्छी तरह चलेगा और बिना विघ्न-बाधा के पूरा हो जायेगा । इसीलिए पाठशालाओं में भी शिक्षणकार्य का आरम्भ प्रार्थना से होता है । प्रार्थना आस्तिकता का संकेत देती है कि हम किसी दिव्य-शक्ति में विश्वास करते हैं । संस्कृत के सभी ग्रन्थ मंगलाचरण के रूप में प्रार्थना से ही आरम्भ होते हैं ।

प्रार्थना अपने आराध्यदेव या सबके आराध्य परम प्रभु की की जाती है । सर्वधर्मसमभाव की दृष्टि से परमेश्वर या परम प्रभु की वन्दना सर्वत्र वाञ्छनीय है क्योंकि उनमें किसी प्रकार का पक्षपात या वैषम्य नहीं है । वे ही जगत् के सृष्टिकर्ता, पालक तथा संहारक भी हैं । जगत् की सारी व्यवस्था का संचालन उन्हीं से होता है । उनकी प्रसन्नता में समस्त प्राणियों का कल्याण

निहित है और उनका कोप संकट लाता है । कोई अपने कर्तव्य से च्युत होता है तो वह परमात्म का कोपभाजन बनता है । ईश्वर की वन्दना उनके प्रति कृतज्ञता का निवेदन है । भारतवर्ष में वेद उपनिषद्, पुराण तथा अन्य सभी ग्रन्थ ईश-वन्दना से भरे हैं । पुराणों में विविध देवों के रूप में भी परमेश्वर की स्तुति है । ऋग्वेद में कहा गया है - **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** । अर्थात् एक ही तत्त्व की स्तुति अनेक रूपों में होती है । हम जिस रूप में भी वन्दना कर रहे हों वा परमात्मा की ही वन्दना है -

सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ।

*****